बाबा मुक्तानन्द की सिखावनी

१

नीलबिन्दु तिल जितना है, परन्तु वस्तुतः यह इतना विशाल है कि इसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। नीलबिन्दु की गतिशीलता के कारण ही हम कार्य कर पाते हैं। इसकी उपस्थिति के कारण ही श्वास हमारे शरीर में आता-जाता है। इसके दिव्य प्रेम की किरणें हमारे अन्दर से प्रवाहित होती रहती हैं और इन्हीं किरणों के कारण हमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम का अनुभव होता है। नीलबिन्दु का तेज हमारे मुखमण्डल तथा हृदय को आलोकित करता है और इसी तेज के कारण, हम दूसरों को प्रेम देते हैं।

~ बाबा मुक्तानन्द

स्वामी मुक्तानन्द, *ध्यान-सोपान : अन्तर-आनन्द की ओर* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१७], पृष्ठ २९-३०।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।